अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

1857 से स्वदेशी तक: हिन्दी नवजागरण की पुनर्व्याख्या - भारतेंदु युग के विशेष संदर्भ में

डॉ. अमित कुमार दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मंधना, कानपुर नगर,उ.प्र.

सार:

प्रस्तुत शोध-पत्र हिन्दी नवजागरण की परम्परागत अवधारणा की एक नवीन पुनर्व्याख्या प्रस्तुत करता है। सामान्यतः हिन्दी नवजागरण को बंगाल नवजागरण की अनुकृति या उसका अनुकरणकर्ता माना जाता रहा है, परन्तु यह शोध-पत्र स्थापित करता है कि हिन्दी नवजागरण का अपना स्वतंत्र, मौलिक और अखिल भारतीय मार्ग था। इस मार्ग का प्रारम्भ बिन्दु 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम है और इसकी परिणति स्वदेशी चेतना में होती है। 1857 के विद्रोह में हिन्दू-मुस्लिम एकता का जो अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ और विदेशी सत्ता के आर्थिक शोषण के विरुद्ध जो चेतना पैदा हुई, उसी चेतना ने भारतेंदु युग में 'पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी' और 'स्वदेशी वस्तु अपनाओ' के नारे का रूप लिया। यह शोध-पत्र डॉ. रामविलास शर्मा, वीरभारत तलवार, नामवर सिंह और मैनेजर पाण्डेय के चिंतन के आलोक में 1857 के इश्तहारों से लेकर भारतेंदु के 'भारत दुर्दशा' तक की वैचारिक यात्रा का विश्लेषण करता है और यह सिद्ध करता है कि हिन्दी में आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय दादाभाई नौरोजी से भी पहले हो चुका था।

मुख्य शब्द: हिन्दी नवजागरण, 1857 का स्वाधीनता संग्राम, स्वदेशी चेतना, धन-निष्कासन सिद्धान्त, बंगीय प्रभाव, अखिल भारतीय दृष्टि, पुनर्व्याख्या

1. प्रस्तावना - पुनर्व्याख्या की आवश्यकता क्यों है:

हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'नवजागरण' शब्द को लेकर सदैव विवाद रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे केवल 'गद्य का विकास' कहा, तो कुछ आलोचकों ने इसे 'पुनर्जागरण' कहकर केवल प्राचीनता का गौरव-गान माना। लेकिन डॉ. रामविलास शर्मा पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इसे 'नवजागरण' के रूप में एक वैज्ञानिक अवधारणा दी। उन्होंने 1977 में 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' और 1989 में 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ' नामक पुस्तकों में इसे एक समग्र सांस्कृतिक-सामाजिक-आर्थिक आन्दोलन के रूप में स्थापित किया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

इसके बावजूद आज भी एक सामान्य धारणा बनी हुई है कि हिन्दी नवजागरण बंगाल का अनुकरणकर्ता है। कहा जाता है कि जो कुछ बंगाल में हुआ, वही कुछ देर से हिन्दी में हुआ। इस धारणा की पुनर्व्याख्या इसलिए जरूरी है क्योंकि दोनों के ऐतिहासिक-सामाजिक आधार ही भिन्न हैं।

बंगाल का नवजागरण 19वीं सदी के प्रारम्भ में ही राजा राममोहन राय (1772-1833) से शुरू होकर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय तक अपने उत्कर्ष पर पहुँच गया था। इसका मुख्य सम्बोधन 'बंगाल' था। बंकिम की प्रसिद्ध पत्रिका 'बंगदर्शन' नाम से ही स्पष्ट है। वे 'सोनार बांग्ला' की बात करते थे।

जबकि हिन्दी नवजागरण का असली उभार 1857 के बाद ही होता है। 1857 से पहले हिन्दी प्रदेश में गद्य का कोई व्यवस्थित स्वरूप नहीं था। 1857 की असफलता ने हिन्दी प्रदेश को एक नया और कठोर पाठ पढ़ाया - कि सीधी सशस्त्र लड़ाई से अंग्रेजों को नहीं हराया जा सकता, अब सांस्कृतिक, साहित्यिक और आर्थिक जागरण से लड़ना होगा। इसी पाठ से भारतेंदु युग का जन्म हुआ। 1857 में जो लाखों लोग मारे गये, जो गाँव जला दिये गये, उस त्रासदी ने हिन्दी जनमानस में एक गहरी राष्ट्रीय चेतना पैदा की।

इसलिए इस शोध का शीर्षक '1857 से स्वदेशी तक' रखा गया है। 1857 इस नवजागरण की पहली मंजिल है, जहाँ से इसकी राजनीतिक चेतना शुरू होती है और 'स्वदेशी' उसकी दूसरी और निर्णायक मंजिल है, जहाँ यह चेतना आर्थिक रूप में प्रकट होती है। बंगाल से हमारा सम्पर्क हुआ, यह सत्य है, पर हमने उस सम्पर्क से 'बंगीयता' नहीं, 'भारतीयता' सीखी। भारतेंदु का प्रसिद्ध कथन - "जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग, किसी जाति का क्यों न हो, वह हिन्दू है"[1] - इस अखिल भारतीय दृष्टि का प्रमाण है।

2. शोध की समस्या

इस शोध की केन्द्रीय समस्या दो धारणाओं को चुनौती देना है। पहली धारणा यह कि हिन्दी नवजागरण का 1857 से कोई सम्बन्ध नहीं है। कई इतिहासकार इसे 'असाहित्यिक' घटना मानकर साहित्य से अलग रखते हैं। दूसरी धारणा यह कि 'स्वदेशी' और 'धन-निष्कासन' (Drain Theory) का विचार बंगाल और महाराष्ट्र से आया।

मुख्य समस्या यह है कि क्या हिन्दी नवजागरण को केवल साहित्यिक सुधार आन्दोलन मानना उचित है या यह 1857 के अधूरे राजनीतिक कार्यभार को सांस्कृतिक रूप में आगे बढ़ाने वाला आन्दोलन था?

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

यदि 1857 के क्रांतिकारियों ने अपने इश्तहारों में लिखा था कि "अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान के करघे तोड़ दिए, जुलाहों को बर्बाद कर दिया, यहाँ का धन लूटकर विलायत ले जा रहे हैं", तो क्या वही बात 15 साल बाद भारतेंदु के 'भारत दुर्दशा' (1880) नाटक में - "अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी, पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी" के रूप में दोहराई नहीं गई?

डॉ. रामविलास शर्मा ने बहुत महत्वपूर्ण संकेत दिया है - "महत्वपूर्ण बात यह है कि गदर के इश्तहारों में भारतीय व्यापार और उद्योग-धन्धों के विनाश की जो बात कही गई है, उसे हरिश्चन्द्र दोहराते हैं।"[2] तो क्या भारतेंदु 1857 की ही परम्परा को आगे बढ़ा रहे थे? और क्या स्वदेशी का विचार 1905 में बंगाल से नहीं, बल्कि 1870 के दशक में ही हिन्दी प्रदेश में पैदा हो चुका था? यही इस शोध की पुनर्व्याख्या का केन्द्रीय प्रश्न है।

3. शोध के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के चार मुख्य उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं -

(क) 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम को हिन्दी नवजागरण के प्रस्थान बिन्दु और प्रथम मंजिल के रूप में प्रमाणित करना और 1857 के इश्तहारों की आर्थिक चेतना का विश्लेषण करना।

(ख) बंगाल नवजागरण के प्रभाव और कलकत्ता के हिन्दी पत्रकारिता केन्द्र की भूमिका को स्वीकार करते हुए भी हिन्दी नवजागरण की मौलिकता - विशेषकर उसकी अखिल भारतीय दृष्टि और हिन्दू-मुस्लिम एकता की चेतना को स्थापित करना।

(ग) यह सिद्ध करना कि 'स्वदेशी' और 'धन-निष्कासन' की चेतना का उदय हिन्दी में दादाभाई नौरोजी (1867) और रमेशचन्द्र दत्त (1901) से भी पहले, भारतेंदु मण्डल के लेखकों - भारतेंदु, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण प्रेमघन के यहाँ हो चुका था।

(घ) राजभक्ति और देशभक्ति के द्वन्द्व के माध्यम से हिन्दी नवजागरण के विकास की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को समझना कि कैसे 'ऑनरेरी मजिस्ट्रेट' भारतेंदु धीरे-धीरे 'भारत दुर्दशा' के रचनाकार बन जाते हैं।

4. शोध प्रविधि

यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसके लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में भारतेंदु हरिश्चन्द्र के मूल नाटक 'भारत दुर्दशा', 'भारत जननी', निबन्ध 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' (बलिया भाषण) तथा उनके सम्पादित पत्र

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

'हरिश्चन्द्र मैगजीन' और 'कविवचन सुधा' का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत के रूप में डॉ. रामविलास शर्मा, वीरभारत तलवार, नामवर सिंह की आलोचना पुस्तकों और 1857 के उपलब्ध इश्तहारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

5. हिन्दी नवजागरण का अखिल भारतीय सम्बोधन:

भारतीय नवजागरण में सर्वाधिक चर्चा बंगला नवजागरण की ही होती रही है। नवजागरण के पश्चिमी मॉडल को सार्वभौम मानने की वजह से भारत जैसे गैर-यूरोपीय देश में आये सांस्कृतिक नवजागरण को बंगाल तक ही सीमित करके समझा-समझाया जाता रहा है। हिन्दी नवजागरण-बंगाल, महाराष्ट्र के नवजागरण से मूलतः भिन्न न होकर अपने दृष्टिकोण और तेवर में भिन्न था।

बांग्ला नवजागरण का जो आरम्भिक स्वर है, वह बंगाल को सम्बोधित है। इसीलिए 'बंग' नाम से पचासों पत्रिकाएँ बंगाल से निकलीं। बंगाल के सबसे अधिक प्रभावशाली लेखक बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय थे। उनके लेखन में हिन्दूवाद का स्वर अधिक मुखर था और उनकी राष्ट्रीयता अपने बंगाल तक सीमित थी। बंकिम का सारा चिंतन और लेखन बंगाल को सम्बोधित था। उस काल के अन्य बंगाली लेखकों की दृष्टि भी प्रायः 'सोनार बांग्ला' के आगे नहीं जाती है।

"महाराष्ट्र के प्रसिद्ध गद्यकार विष्णु कृष्ण चिपलूणकर वर्ण-भेद की खाई नहीं पार कर पाये थे। महात्मा ज्योतिबा फूले को वे हीन दृष्टि से देखते थे। पर भारतेंदु और उनके मण्डल के लेखकों में किसी प्रकार की संकीर्णता न थी- न वर्ण-भेद की और न क्षेत्रीयता की।"[3]

अन्य लेखकों की भांति भारतेंदु मण्डल भी देश के स्वतंत्र सांस्कृतिक व्यक्तित्व की खोज कर रहा था लेकिन हिन्दी नवजागरण का प्रत्येक लेखक समूचे भारत की चिंता करता है। 'भारत दुर्दशा', 'भारत सौभाग्य', 'दुर्भिक्ष दलित भारत' - नाम से ही हिन्दी नवजागरण के अखिल भारतीय सम्बोधन को समझा जा सकता है। भारतेंदु के बलिया वाले प्रसिद्ध भाषण का शीर्षक भी महत्वपूर्ण है। वे 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है'- के सम्बन्ध में चिंतित थे।

उन्होंने लिखा- "तुम भी मतमतान्तर का आग्रह छोड़ो। आपस में प्रेम बढ़ाओ। इस महामंत्र का जप करो। जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग, किसी जाति का क्यों न हो, वह हिन्दू है। ..... बंगाली, मराठी, पंजाबी, मदरासी, वैदिक, जैन, ब्राह्मण, मुसलमान सब एक का हाथ एक पकड़ो।"

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

भारतेंदु की चिंता हर जगह पूरे भारत की चिंता है; 'भारत दुर्दशा' की चिंता है, 'भारत जननी' की चिंता है। भारत का धन विदेश चला जा रहा है। 'भारत जननी' नाटक में भारतमाता अपने बेटों से कह रही है- "वत्स! कब तक इस प्रकार से तुम सब निद्रित रहोगे, अब सोने का समय नहीं, एक बेर आँखें खोल भली-भाँति पृथ्वी की दशा को तो देखो कि तुम्हारी अब क्या अवस्था हो रही है, क्या थे और क्या हो गए, एक बेर तो अपने मन में विचारो।"[4]

क्या थे और क्या हो गये और क्या होंगे, अभी की यह चिंता केवल हिन्दी प्रदेश की ही नहीं अखिल भारतीय चिंता है। यही हिन्दी नवजागरण को बंगाल के नवजागरण से अलग और बड़ा बनाती है।

6. 1857 की भूमिका - हिन्दी नवजागरण की प्रथम मंजिल:

हिन्दी नवजागरण की पृष्ठभूमि में 1857 का स्वाधीनता संग्राम था जिसमें हिन्दू-मुसलमान एकजुट होकर अंग्रेजी उपनिवेशवाद के खिलाफ खड़े थे। 1857 के सैनिक व असैनिक नेताओं का उद्देश्य अंग्रेजों को सारे देश से निकालना था, किसी एक क्षेत्र या रियासत से नहीं। साम्प्रदायिक स्तर पर हिन्दी प्रदेश में इस तरह की एकता अपने आपमें एक मिसाल है। सदियों से विभक्त समाज के लिए यह किसी चमत्कार से कम न था।

जाति और धर्म को भुलाकर हिन्दी भाषी समाज के लगभग ढाई लाख नागरिक (डेढ़ लाख अवध में व एक लाख बिहार में) मारे गये। 1857 के विद्रोह ने जब बहादुरशाह जफर को अपना प्रतीकात्मक शासक स्वीकार कर लिया तब 'फूट डालो और शासन करो' को लागू करने की नीति वाले अंग्रेजों के लिए यह एक अविश्वसनीय घटना थी।

सन् 57 के विद्रोह को गैर सांस्कृतिक और गैर साहित्यिक घटना मानकर हिन्दी नवजागरण से इसके सम्बन्ध की चर्चा न करने के पक्ष में यही तर्क दिया जाता है कि इससे नवजागरण काल के लेखकों का कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध लेखन के स्तर पर नहीं दिखाई पड़ता है। जबकि डॉ. रामविलास शर्मा ने हिन्दी नवजागरण की शुरूआत 1857 से मानकर इस 'असाहित्यिक' और 'गैर सांस्कृतिक' आन्दोलन के संदेश को ग्रहण किया है।

उनका मानना है कि हिन्दी प्रदेश में नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से शुरू होता है। इस स्वाधीनता संग्राम की पहली विशेषता यह है कि यह सारे देश की एकता को ध्यान में रखकर चलाया गया था।

सन् 1857 के विद्रोह के संदेश का प्रत्यक्ष उल्लेख भारतेंदु युगीन साहित्य में नहीं है। यदि उल्लेख है भी तो हिन्दी नवजागरण की आरम्भिक अवस्था में लिखने-पढ़ने वाले लोग अंग्रेजी शासन के प्रति एक दुविधाजनक मानसिक स्थिति में हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हिन्दी प्रदेश के जनमानस में इस विद्रोह की चेतना ही समाप्त हो गयी थी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

प्रेमघन के 'भारत सौभाग्य' नाटक में, राधाचरण गोस्वामी के 'यमलोक की यात्रा' में, प्रताप नारायण मिश्र के 'कानपुर माहात्म्य' में तथा राधाकृष्ण दास के 'निस्सहाय हिन्दू' में 1857 का हवाला उल्लेखनीय है। सन् 1857 का गौरवान्वित वर्णन न होना आज लोगों को अटपटा लग सकता है लेकिन ब्रिटिश दमन तथा 1858 की घोषणा और अंग्रेजी इतिहासकारों द्वारा स्वाधीनता संग्राम को गलत तरीके से पेश किये जाने के कारण ऐसा हो सका। सन् 1857 के विद्रोह में साम्प्रदायिकता की दूर-दूर तक कोई ध्वनि नहीं थी- नवजागरण के चिंतकों के यहाँ यह चेतना किस रूप में ध्वनित हुई है; यह देखना भी कम दिलचस्प नहीं है। भारतेंदु के यहाँ इसकी संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

7. राजभक्ति और देशभक्ति का द्वन्द्व:

हिन्दी प्रदेश के नवजागरण के संदर्भ में एक प्रश्न यह है कि कांग्रेस की स्थापना तक 19वीं सदी का शिक्षित भद्र वर्ग आमतौर पर अंग्रेजी राज का समर्थक था। यह वर्ग पश्चिमी शिक्षा, यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान और सभ्यता का प्रशंसक था और भारत में मुसलमानी शासन के मुकाबले अंग्रेजी राज को कानून-न्याय और सुव्यवस्था का शासन मानता था।

इस वर्ग को अंग्रेजी शासन से भारतीयों में शिक्षा और ज्ञान के फैलने, आत्मनिर्भरता आने और एक राष्ट्र की भावना पनपने की बड़ी-बड़ी उम्मीदें थी। इसीलिए इस वर्ग ने 1857 के विद्रोह का समर्थन नहीं किया। यह शिक्षित भद्र वर्ग अंग्रेजी शासन की ज्यादतियों की नम्रतापूर्वक शिकायत करता था, उसकी कुछ नीतियों की आलोचना करता था- पर यह उस शासन का विरोधी नहीं था।

इस वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द और भारतेंदु हरिश्चन्द्र, दोनों ही सरकार के वफादार थे। 1857 के विद्रोह के साथ दिल्ली में जब थोड़े दिन के लिए हिन्दुस्तानियों का शासन कायम हो गया था तब राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द ने उसके बारे में लिखा- "हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों को इस थोड़े दिन के गदर में अच्छी तरह हिन्दुस्तानी अमलदारी का मजा मालूम पड़ गया। तार कट गया, डाक उठ गयी, रेल टूट गयी, रास्ता बंद हो गया, दिनदहाड़े डाका पड़ने लगा, जिसकी लाठी उसकी भैंस का मुआमला हुआ। वाह, क्या अच्छी तैमूरियों की सल्तनत कायम हुई।"[5]

इतिहास तिमिरनाशक के तीसरे खण्ड में जहाँ राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द मुस्लिम शासन को सिर्फ लूटपाट, बर्बर हिंसा और जोर-जुल्म के रूप में पेश करते हैं, उसे हिन्दुस्तानी के पिछड़ेपन का कारण बतलाते हैं तो दूसरी तरफ भारतेंदु मुसलमानों की अंग्रेजी राज से तुलना करते हुए बताते हैं कि मुसलमानों के शासन में शत्-सहस्र बड़े-बड़े दोष थे, किन्तु दो गुण थे,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

प्रथम तो यह उन सबों ने अपना घर यहीं बनाया, इससे यहाँ की लक्ष्मी यहीं रहती थी और दूसरा यह कि हिन्दुओं को भी उच्च पद मिलते थे, जो अंग्रेजी राज में नहीं मिलते।[6]

बीस साल के लड़के भारतेंदु हरिश्चन्द्र को अंग्रेजों ने बनारस शहर का ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भले ही बना दिया हो लेकिन युग की दुविधा के बीच भी- "अंग्रेज राज सुखसाज सजे सब भारी, पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी"[7] - इस कविता में राजभक्ति व देशभक्ति की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति को पहचाना जा सकता है। यही द्वन्द्व हिन्दी नवजागरण की आत्मा है।

8. स्वदेशी आन्दोलन और अंग्रेजी राज के स्वरूप की पहचान:

भारतेंदु हरिश्चन्द्र व हिन्दी नवजागरण के लेखकों-विचारकों ने अंग्रेजी राज के बारे में जो कुछ लिखा; उसे ध्यानपूर्वक देखने से यह समझा जा सकता है कि वे लोग बहुत गहराई से अंग्रेजी राज की आर्थिक नीति से परिचित थे। यह समझ किसी किताबी ज्ञान से नहीं, बल्कि 1857 के गदर के इश्तहारों और अपने आस-पास की गरीबी को देखकर पैदा हुई थी।

डॉ. राम विलास शर्मा ने बहुत महत्वपूर्ण बात कही है - "महत्वपूर्ण बात यह है कि गदर के इश्तहारों में भारतीय व्यापार और उद्योग-धन्धों के विनाश की जो बात कही गई है, उसे हरिश्चन्द्र दोहराते हैं।" अर्थात जो बात 1857 के क्रांतिकारियों ने अपने पर्चों में कही थी कि अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान के करघे तोड़ दिए, जुलाहों को बर्बाद कर दिया, वही बात भारतेंदु अपने नाटकों और कविताओं में कहते हैं।

कविवचन सुधा' में प्रकाशित वह प्रतिज्ञा- पत्र इस प्रकार है: "हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा न पहिनेंगे और जो कि पहले से मोल ले चुके हैं और आज की तिथि तक हमारे पास है उनको तो उनके जीर्ण हो जाने तक काम में लावेंगे पर नवीन मोल लेकर किसी भांति का भी विलायती कपड़ा न पहिनेंगे, हिन्दुस्तान ही का बना कपड़ा पहिनेंगे; हम आशा करते हैं कि इसको बहुत ही क्या प्रायः सब लोग स्वीकार करेंगे"।[8] हिन्दी

23 मार्च 1878 को 'कवि वचन सुधा' में प्रकाशित प्रतिज्ञा पत्र के विषय में डॉ.रामविलास शर्मा ने लिखा है "उस दिन हरिश्चंद्र की कलम से भारतीय जनता ने अंग्रेजी राज के नाश का वारंट लिख दिया था..... हरिश्चंद्र ने न केवल हिंदी प्रदेश के लिए वरन समूचे भारत के लिए एक नए युग का द्वार खोल दिया था।"[9]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष (1899) श्री रमेशचन्द्र दत्त ने व्यवस्थित तरीके से 1901 में 'भारत के आर्थिक इतिहास' (The Economic History of India)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

नाम से पहली बार उपनिवेशवादी भारत का आर्थिक इतिहास लिखा। उनसे पहले दादाभाई नौरोजी ने अपनी प्रसिद्ध 'Drain Theory' - धन निष्कासन के सिद्धान्त को दिया था तथा महादेव गोविन्द रानाडे जैसे सुधारक नेता आर्थिक मामलों पर अपनी राय रख चुके थे।

जबकि भारतेंदु हरिश्चन्द्र उनसे भी पूर्व, लगभग 1870-1880 में ही अंग्रेजी राज के शोषण, धन का देश से बाहर जाना, अकाल, टैक्स इत्यादि को हिन्दुस्तान की दुर्दशा के लिए कारण बता रहे थे। उन्होंने 'भारत दुर्दशा' (1880) नाटक में अंग्रेजी राज को 'भारत दुर्दैव' कहा था और उसके समाधान के लिए स्वदेशीयता व उद्योग धंधों के विकास की वकालत की। उनकी मुख्य चिंता यह थी कि -

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।।"

यह एक पंक्ति ही पूरे हिन्दी नवजागरण के आर्थिक चिंतन का सार है। राज तो सुख-साज से सजा है, रेल है, तार है, अदालत है, पर सारा धन विदेश चला जा रहा है, यही सबसे बड़ी ख्वारी (दुःख) है।

बालकृष्ण भट्ट के शब्दों में "देश का धन विलायत ढोया चला जा रहा है। कितना भारी पाप हम कर रहे हैं।"[10] चौधरी बद्रीनारायण प्रेमघन ने अंग्रेजों की लूट को "लूट विलायत भारत खाय, मालताल बहुविधि फैलाय"[11] - कहकर उसी बात को उद्घाटित किया।

अंग्रेजी राज में पड़ने वाले दुर्भिक्षों (अकाल) का बड़ा ही दर्दनाक वर्णन भारतेंदु युग के लेखकों ने किया है। 1870 के दशक में जब पूरे उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा, तो भारतेंदु ने लिखा - 'हाय! हाय! भारत में हाहाकार मचा है, लोग भूखों मर रहे हैं, पर सरकार को इसकी चिंता नहीं।' अकाल और महामारी के चित्रण में भारतेंदु मण्डल के लेखकों ने औपनिवेशिक लूट को सीधे तौर पर जिम्मेदार ठहराया।

स्वदेशी की भावना इसी आर्थिक शोषण की समझ से पैदा हुई। भारतेंदु ने 'स्वदेशी' वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने अपने प्रसिद्ध व्याख्यान में कहा कि "परदेशी वस्तु का बहिष्कार करो और स्वदेशी अपनाओ। तुम विदेशी कपड़ा मत पहनो, अपने देश के जुलाहों का बनाया कपड़ा पहनो।" उन्होंने स्वदेशी व्रत लिया और अपने मित्रों को भी इसके लिए प्रेरित किया। यही भावना आगे चलकर 1905 के स्वदेशी आन्दोलन का वैचारिक आधार बनी।

इस प्रकार हिन्दी नवजागरण में आर्थिक राष्ट्रवाद का बीज 1857 के विद्रोह के अनुभव और ब्रिटिश राज की शोषणकारी नीतियों की पहचान से ही फूटा। यह कोरा भावुक राष्ट्रवाद नहीं था, बल्कि आर्थिक शोषण की ठोस समझ पर आधारित राष्ट्रवाद था।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

9. निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी नवजागरण की अवधारणा डॉ. राम विलास शर्मा द्वारा स्थापित एक मौलिक और वैज्ञानिक अवधारणा है। यह बंगाल के नवजागरण की नकल नहीं, बल्कि हिन्दी प्रदेश की अपनी ऐतिहासिक-सामाजिक परिस्थितियों से उपजा हुआ जागरण है। इस शोध-पत्र के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं:

1. 1857 से प्रारम्भ: हिन्दी नवजागरण 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से शुरू होता है, जिसे इसकी पहली मंजिल माना जाता है। 1857 के हिन्दू-मुस्लिम एकता के संदेश को हिन्दी नवजागरण ने अपने में समाहित किया।
2. अखिल भारतीय दृष्टि: बंगाल के क्षेत्रीय और कुछ हद तक संकीर्ण नवजागरण के विपरीत, इसका सम्बोधन अखिल भारतीय था। भारतेंदु 'समूचे भारत' की चिंता करते हैं, केवल बनारस या उत्तर प्रदेश की नहीं। उनके नाटकों के नाम ही 'भारत दुर्दशा', 'भारत जननी' हैं।
3. बंगीय सम्पर्क परन्तु मौलिकता: इसका विकास बंगाल के नवजागरण के सम्पर्क और प्रेरणा से हुआ, पर यह उसका अनुकरण नहीं था। हिन्दी पत्रकारिता की नींव कलकत्ता में पड़ी, पर उसकी आत्मा हिन्दी प्रदेश की थी।
4. औपनिवेशिक विरोध केन्द्र में: इसके केन्द्र में अंग्रेजी राज की आर्थिक लूट और दासता के विरुद्ध तीव्र असंतोष था। 'धन का विदेश जाना' इसका केंद्रीय नारा था, जो दादाभाई नौरोजी से भी पहले भारतेंदु ने दिया।
5. राजभक्ति-देशभक्ति का द्वन्द्व: प्रारम्भ में शिक्षित वर्ग में राजभक्ति और देशभक्ति का द्वन्द्व था। वे अंग्रेजी कानून-व्यवस्था के प्रशंसक थे, पर उसकी लूट के आलोचक भी थे। यह द्वन्द्व धीरे-धीरे स्वदेशी और स्वराज की स्पष्ट चेतना में बदल गया।
6. समन्वयवादी और जनोन्मुखी चरित्र: डॉ. नामवर सिंह के अनुसार यह एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जिसमें बौद्धिकता-भावुकता, ऐहिकता-आमुष्मिकता का समन्वय है। यह भद्रलोक तक सीमित नहीं, बल्कि आम जनता - किसान, जुलाहा, व्यापारी तक पहुँचा।

अतः हिन्दी नवजागरण केवल साहित्य का नवजागरण नहीं, बल्कि हिन्दी जाति के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरण का समग्र दस्तावेज है। 1857 की हिन्दू-मुस्लिम एकता, स्वदेशी की भावना और 'भारत दुर्दशा' का बोध आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना 150 साल पहले था। आज जब फिर से 'मेक इन इंडिया' और 'स्वदेशी' की बात हो रही है, तब भारतेंदु युगीन चिंतन हमें नई दृष्टि देता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

10. संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. हरिश्चंद्र भारतेन्दु, भारतेन्दु समग्र, संपा. हेमंत शर्मा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ- 474-475

2. शर्मा, राम विलास, (1977) महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-12-13

3. सिंह, बच्चन, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996, पृष्ठ-285

4. हरिश्चंद्र भारतेन्दु, भारतेन्दु समग्र, संपा. हेमंत शर्मा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ- 475

5. सिंह, शिवप्रसाद, राजा 'सितारे हिंद', इतिहास तिमिरनाशक, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1888. भाग-2, पृष्ठ-66

6. हरिश्चंद्र भारतेन्दु, भारतेन्दु समग्र, संपा. हेमंत शर्मा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ- 732

7. हरिश्चंद्र भारतेन्दु, भारतेन्दु समग्र, संपा. हेमंत शर्मा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ- 461

8. हरिश्चंद्र भारतेन्दु, भारतेन्दु समग्र, संपा. हेमंत शर्मा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ- 1091

9. शर्मा, राम विलास. (1989). भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-74

10. भट्ट, बालकृष्ण, बालकृष्ण भट्ट के निबंधों का संग्रह, संपा. लक्ष्मी शंकर व्यास, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1960, पृष्ठ-59

11. चौधरी, बदरी नारायण 'प्रेमघन', प्रेमघन सर्वस्व, प्रथम भाग, संपा. प्रभाकरेश्वर प्रसाद उपाध्याय एवं दिनेश नारायण उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1960, पृ. 186.